कथा सरिता

परमात्मा की आवाज़

एक व्यक्ति को रास्ते में यमराज मिल गये। वो व्यक्ति उन्हें पहचान नहीं सका। यमराज ने पीने के लिए पानी मांगा। उस व्यक्ति ने उन्हें पानी पिलाया। पानी पीने के बाद यमराज ने बताया कि मैं तुम्हारे प्राण लेने आया हूँ, लेकिन चूंकि तुमने मेरी प्यास बुझाई है, इसलिए मैं तुम्हें अपनी किस्मत बदलने का एक मौका देता हूँ। यह कहकर यमराज ने उसे एक डायरी देकर कहा, तुम्हारे पास 5 मिनट का समय है, इसमें तुम जो भी लिखोगे वही होगा। लेकिन ध्यान रहे केवल 5 मिनट।

उस व्यक्ति ने डायरी खोलकर देखा तो पहले पेज पर लिखा था कि उसके पड़ोसी की लॉटरी निकलने वाली है और वह करोड़पति बनने वाला है। उसने वहाँ लिखा कि पड़ोसी की लॉटरी ना निकले। अगले पेज पर लिखा था उसका एक दोस्त चुनाव जीतकर मंत्री बनने वाला है। उसने लिख दिया कि वह चुनाव हार जाये।

इसी तरह वह पेज पलटता रहा और अंत में उसे अपना पेज दिखाई दिया। जैसे ही उसने कुछ लिखने के लिए अपना पेन उठाया, यमराज ने उसके हाथों से डायरी ले ली और कहा, वत्स तुम्हारा 5 मिनट का समय पूरा हुआ, अब कुछ नहीं हो सकता। तुमने अपना पूरा समय दूसरों का बुरा करने में निकाल दिया और अपना जीवन खतरे में डाल दिया। अतः तुम्हारा अंत निश्चित है। यह सुनकर वह व्यक्ति पछताया, लेकिन सुनहरा समय निकल चुका था।

यदि ईश्वर ने आपको कोई शक्ति प्रदान की है तो कभी किसी का बुरा न सोचो, न करो। दूसरों का भला करने वाला सदा सुखी रहता है और ईश्वर की कृपा सदा उस पर बनी रहती है। प्रण लें कि आज से हम किसी का बुरा नहीं सोचेंगे और ना ही करेंगे।

विचार करके देखें... प्रतिदिन आप अपने घर में झाड़ू लगाते हैं, क्योंकि धूल मिट्टी रोज़ आती रहती है। रोज़ सफाई करते हैं, फिर भी धूल मिट्टी आती है। तो जैसे घर की शुद्धि करना प्रतिदिन आवश्यक है, ऐसे ही शरीर की शुद्धि, मन की शुद्धि, जीवन की शुद्धि, धन की शुद्धि करना भी बहुत आवश्यक है। इससे व्यक्ति का जीवन पवित्र बना रहता है। व्यक्ति चिंता, तनाव, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आदि दोषों से बचा रहता है और उसके जीवन में आनन्द, उत्साह, निर्भयता, सेवा, परोपकार, दान, दया आदि गुण उत्पन्न होते जाते हैं। इन गुणों को जीवन में उत्पन्न करें और अपने जीवन को सफल बनाएं।

स्वामी का पता

गंगा के किनारे, उस निर्जन स्थान में जहाँ लोग मुर्दे जलाते हैं, अपने विचारों में तल्लीन कवि तुलसीदास घूम रहे थे। उन्होंने देखा कि एक स्त्री अपने मृत पति की लाश के पैरों के पास बैठी है और ऐसा सुन्दर श्रृंगार किए हुए है मानो उसका विवाह होने वाला हो।

तुलसीदास को देखते ही वह उठी और उन्हें प्रणाम करके बोली - महात्मा मुझे आशा दो और आशीर्वाद दो कि मैं अपने पति के पास स्वर्ग लोक को जाऊँ।

तुलसीदास ने पूछा - मेरी बेटी! इतनी जल्दी की क्या आवश्यकता है। यह पृथ्वी भी तो उसी की है जिसने स्वर्ग लोक बनाया है।

स्त्री ने कहा - स्वर्ग के लिए मैं लालायित नहीं हूँ। मैं अपने स्वामी के पास जाना चाहती हूँ।

तुलसीदास मुस्कुराये और बोले - मेरी बच्ची अपने घर जाओ। यह महीना बीतने भी न पाएगा कि वहीं तुम अपने स्वामी को पा जाओगी।

आनन्दमयी आशा के साथ वह स्त्री वापिस चली गई। उसके बाद से तुलसीदास प्रतिदिन उसके घर गये, अपने ऊँचे ऊँचे विचार उसके सामने उपस्थित किए और उन पर उसे सोचने के लिए कहा। यहाँ तक कि उस स्त्री का हृदय ईश्वरीय प्रेम से लबालब भर गया।

एक महीना मुश्किल से बीता होगा कि उसके पड़ोसी उसके पास आए और पूछने लगे - नारी! तुमने अपने स्वामी को पाया?

विधवा मुस्कुराई और बोली - हाँ, मैंने अपने स्वामी का पा लिया। उत्सुक्ता से सबने पूछा - वे कहाँ हैं?

स्त्री ने कहा - मेरे साथ एक होकर मेरे स्वामी मेरे हृदय में निवास कर रहे हैं।

दुःख की पोटली

एक आदमी निरन्तर रोता था जाके मस्जिद में कि हे प्रभु, मुझे इतना दुःखी क्यों बनाया? आखिर मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है? ये अन्याय हो रहा है। और मैं तो सुनता था, तू बड़ा न्यायी है, रहीम है, रहमान है, कृपालु है, महाकरूणावान है। मगर सब धोखे की बातें हैं। मुझे इतना दुःख क्यों दिया? सब मज़े में हैं। सब आनन्द कर रहे हैं। मैं ही दुःख में सड़ा जा रहा हूँ। कुछ कृपा कर, अगर सुख न दे सके तो कम से कम इतना तो कर कि किसी और का दुःख मुझे दे दे, ये मेरा दुःख किसी और को दे दे। इतना तो कर।

उसने एक रात सपना देखा कि कोई आवाज़ आकाश से कह रही है कि सब लोग अपने अपने दुःख लेके मस्जिद पहुँच जाएं। वो तो बड़ी जल्दी तैयार हो गया। उसने जल्दी से अपना दुःख बांधा, पोटली उठाई, भागा मस्जिद की तरफ। खुद भी भागा, उसने देखा, बड़ा हैरान हुआ, पूरे गांव के लोग अपनी अपनी पोटलियां लिए जा रहे हैं। वो तो सोचता था जिनके जीवन में कोई भी दुःख नहीं है...राजा भी भागा जा रहा है। वज़ीर भी भागे जा रहे हैं। नेता भी भागे जा रहे हैं, पण्डित पुरोहित भी भागे जा रहे हैं। उसने मौलवी को भी देखा, वो भी अपना गट्ठर लिए चला जा रहा है। सबके गट्ठर हैं। और एक और बात हैरानी की मालूम हुई...किसी के पास छोटी मोटी पोटली नहीं है। क्योंकि वो सोचने लगा कि किससे बदलना है अगर बदलने का मौका आ जाए। मगर सब बड़ी बड़ी पोटलियाँ लिए हुए हैं। ये तो पोटलियाँ कभी दिखाई भी नहीं पड़ी थी उसको।

सभी मस्जिद में पहुंच गए। सारे लोग उत्तेजित हैं कि कुछ होने वाला है। और फिर एक आवाज़ हुई कि, सब लोग मस्जिद की खूँटियों पर अपनी अपनी पोटलियाँ टांग दें। सबने जल्दी से टांग दी। सभी छुटकारा पाना चाहते थे। और फिर एक आवाज़ हुई कि अब जिसको जिसकी पोटली चुननी हो, चुन लें, बदल लें। और वो आदमी भागा। सारे लोग भागे। मगर चकित होने की बात तो ये थी कि उस आदमी ने भाग के अपनी पोटली फिर से उठा ली कि कोई दूसरा न उठा ले। और यही हालत सबकी थी। सबने अपनी अपनी उठा ली। वो बड़ा हैरान हुआ, लेकिन अब बात उसके ख्याल में आ गई कि उसने अपनी क्यों उठाई। सोचा कि अपने दुःख कम से कम परिचित तो हैं, दूसरे का बड़ा पोटला है, और पता नहीं, इसके भीतर क्या हो! अपने दुःख कम से कम जाने माने तो हैं, उनके साथ जीते तो रहे हैं ज़िन्दगी भर, धीरे धीरे अभ्यस्त भी हो गए हैं। और अब धीरे धीरे उतना उनसे दुःख भी नहीं होता। कांटा गड़ता ही रहा हो, गड़ता ही रहा हो, गड़ता ही रहा हो तो धीरे धीरे चमड़ी भी मज़बूत हो जाती है। उस जगह कांटा गड़ते गड़ते फिर चमड़ी में उतना दर्द भी नहीं होता। सिरदर्द ज़िन्दगी भर होता ही रहा तो धीरे धीरे आदमी भूल ही जाता है। सिरदर्द और सिर में कोई फर्क ही नहीं रह जाता है। एक अभ्यास हो जाता है।

और तब उसे समझ में आया कि सबने अपने अपने क्यों उठा लिए। सब डर गए कि कहीं दूसरे का न उठाना पड़े, पता नहीं दूसरे की अपरिचित पोटली, भीतर कौन से साँप बिच्छू समाए हों। प्रत्येक ने अपनी अपनी पोटलियाँ उठा लीं और सब बड़े खुश थे कि अपनी पोटली वापिस मिल गई। और सब अपने घर की तरफ भागे जाने लगे। सुबह जब उसकी नींद खुली, तब उसे सच्चाई समझ में आई। ऐसा ही है। यहाँ सब दुःखी हैं। मगर एक अभिनय चल रहा है। इस अभिनय से जो जाग गया, उसके जीवन में ही सन्यास का जन्म होता है। अभिनय से जाग जाना सन्यास है। जो साक्षी हो गया वो जी गया। जिसने परमात्मा से प्रेम किया वही आनंद से पूर्ण है, वही सुखी है।

सहरसा-बिहार। 'इज़ी लाइफ फॉर बिज़ी ज्यूरिस्ट्स' विषयक ज्यूरिस्ट कॉन्फ्रेन्स का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी, न्यायमूर्ति वी.ईश्वरैय्या,हैदराबाद, एस.डी.ओ. शम्भू नाथ झा, आई.एम.ए. के जिला सचिव डॉ. शीलेन्द्र कुमार, जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष मनोज सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता बिन्देश्वरी भगत तथा ब्र.कु. कृष्ण।

चरखी-दादरी। 'गीता का भगवान तथा पारिवारिक शान्ति एवं परमात्म अनुभूति शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. उषा,माउंट आबू, ब्र.कु. प्रेमलता, विधायक राजदीप फोगाट, ब्र.कु. अनुभव,अलवर तथा अन्य।

वालगंगा-तुरकौलिया(बिहार)। दीपावली महोत्सव कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् विधायक फैसल रहमान को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. निशा।

अमेठी-उ.प्र.। विधायक राकेश प्रताप सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमित्रा तथा ब्र.कु. सुषमा।

PRAJAPITA BRAHMA KUMARI ISHWARIYA VISHWAVIDYALAYA

आस्का-ओडिशा। 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में विधायक देवराज मोहन्ती, एन.ए.सी. चेयरमैन मधुस्मिता पोल्लई, बार एसोसिएशन प्रेसीडेंट सुरेन्द्रनाथ पण्डा, मुख्य वक्ता ब्र.कु. माला,डायरेक्टर,पी.यू.आर.सी.,ब्रह्मपुर, अभियान यात्री ब्र.कु. अवनीश, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. प्रवाती व अन्य।

निम्बाहेड़ा-चित्तौड़गढ़(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़, आचार्य तुलसी ब्लड फाउण्डेशन तथा पल्लवन संस्था के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'ब्लड डोनेशन कैम्प' में उपस्थित हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिवाली, ए.एफ.टी.बी. के प्रेसीडेंट कुलदीप नाहेर, पल्लवन संस्था के प्रेसीडेंट कुलदीप झाला, लायन्स क्लब प्रेसीडेंट वर्षा कृपलानी तथा डॉक्टर्स। इस अवसर पर ब्र.कु. शिवाली सहित पचास ब्र.कु. भाई बहनों ने रक्त दान किया।

बांदा-उ.प्र.। जिला कारागार में राजयोग कक्ष का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में जेलर रंजीत कुमार, अन्य जेलर तथा डेप्युटी जेलर के साथ ब्र.कु. गीता व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

एक मोमबत्ती सड़क दुर्घटना में

झालावाड़-राज.। विश्व यादगार दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ट्रैफिक पुलिस इंचार्ज राधेश्याम जी, रोडू लाल जी, समाजसेवी कुलदीप अरोरा, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।